
आवे याद वगैरह
रिपुञ्जय निशान्त

आवे याद बसेरा

रिपुञ्जय निशान्त

आवे याद बसेरा

(भोजपुरी गीत संग्रह)

रिपुञ्जय निशान्त



भोजपुरी संस्थान
मार्ग--3, इन्द्रपुरी, पटना--800024

भोजपुरी संस्थान ग्रंथमाला के अठहत्तरवाँ फूल
ग्रंथमाला-सम्पादक : पाण्डेय कपिल

आवे याद बसेरा

(भोजपुरी गीत संग्रह)

गीतकार : रिपुञ्जय निशान्त
प्रकाशक : भोजपुरी संस्थान, मार्ग-3, इन्द्रपुरी पटना-800024
प्राप्ति-माध्यम : रिपुञ्जय निशान्त, अधिवक्ता रामराज चौक, दहियाँवा, छपरा (बिहार)-841301

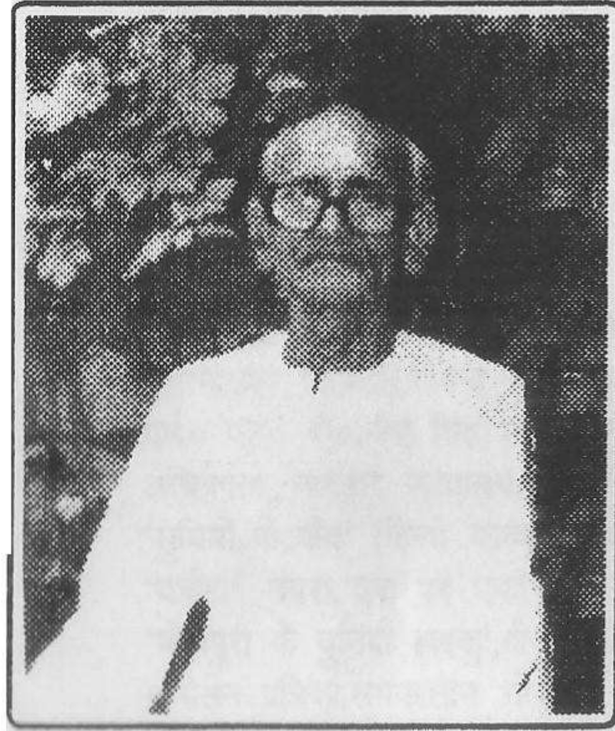
संस्करण : पहिला, 2003 ई०
आवरण : मदनजी 'पथिक'
अक्षर संयोजक : हरि ओम कुमार
मुद्रक : बालाजी स्क्रीन प्रिन्टर्स, छपरा
मूल्य : इक्यावन रुपया

AAVE YAD BASERA

A Collection of lyrical compositions written in Bhojpuri

by

Ripunjay Nishant



बाबू जी
स्व० नवल किशोर प्रसाद
के
पावन स्मृति में



रिपुञ्जय निशान्त

जन्म: 4 मार्च 1950

ग्राम: देवरिया,थाना: महाराजगंज ,जिला: सीवान

स्थायी पता	:	राम राज चौक, दहियाँवा, छपरा 841301
पिता	:	स्व० नवल किशोर प्रसाद
माता	:	श्रीमती लीलावती देवी
पत्नी	:	श्रीमती रानी श्रीवास्तव
शिक्षा	:	माध्यमिक, आद्या उच्च विद्यालय, पटेढ़ी से, स्नातक (दर्शनशास्त्र प्रतिष्ठा),राजेन्द्र महाविद्यालय छपरा से, एल० एल० बी०,गंगा सिंह महाविद्यालय छपरा से
सम्प्रति	:	अधिवक्ता, व्यवहार न्यायालय, छपरा
प्रकाशन	:	'सुधियों के पाँव' (हिन्दी काव्य संग्रह), प्रकाशक 'चर्चना' छपरा,'एक पर एक' ,'डेग पर डेग', 'भोजपुरी के चुनिंदा हाइकु',गीत विशेषांक भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका,समकालीन भोजपुरी साहित्य आ 'भोजपुरी सतसई' के सह- कवि 'झकोर',भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका,कविता, कोइल,स्पन्दन आ पनघट आदि ढेर सारा भोजपुरी आ हिन्दी पत्र -पत्रिकन में रचना प्रकाशित, आकाशवाणी पटना के 'आरती' कार्यक्रम से अनेक कविता प्रसारित
सम्पादन	:	समिधा (हिन्दी काव्य संग्रह)
सम्बद्धता	:	अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, विश्व भोजपुरी सम्मेलन,सारण जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन, सारण जिला भोजपुरी साहित्य सम्मेलन,सारण जिला भोजपुरी भाषा सम्मेलन,अखिल भारतीय साहित्य परिषद,चर्चना (साहित्य- संस्कृति-शिक्षा- पीठ,छपरा) आउर कई गो साहित्यिक - संस्था के सदस्य
संस्थापक	:	'वातायन' (साहित्य, संस्कृति, शिक्षा- संस्थान, छपरा)

आमुख

भोजपुरी गीत-रचना के साहित्यिक संस्कार जवना गीतकारन का कलम से सुलभ होत रहल बा,ओह में रिपुञ्जय निशान्त अन्यतम रहल बाड़े। अइसन विशिष्ट गीतकार के चुनल इक्यावन गीतन के इ पहिलका संग्रह 'आवे याद बसेरा ' भोजपुरी संस्थान ग्रंथमाला के अठहत्तरवाँ ग्रंथ-पुष्प का रूप में प्रस्तुत करत हमरा गौरव के बोध आ हुलास के अनुभूति हो रहल बा ।

रिपुञ्जय निशान्त के रसात्मक अनुभूति ,बौद्धिक संस्कार से संयमित होके भी ,आपन मूलाधार अक्षुण्ण रखले बा आ अपना अभिव्यक्ति के सहजता से भोजपुरी गीत के उदात्त धरातल देबे में सफल भइल बा। ग्राम्य संस्कृति, आंचलिक भाव-बोध, प्राकृतिक सौन्दर्य आ ओकर मानवीय लगाव उनका संवेदनशील आ उदात्त कवि -हृदय में भावात्मक अनुराग -भाव के जे लहरा उठावत रहल बा ऊ उनका गीतन में बहुत मार्मिकता से अभिव्यञ्जित भइल बा। रिपुञ्जय निशान्त के व्यञ्जक पद- विन्यास, लयात्मक छन्द-योजना आ सुविचारित विम्ब-विधान उनका शिल्प-सामर्थ्य के प्रमाण बा । भाव आ शिल्प के समंजित संतुलन उनका रचना -कौशल के परिचायक बा।

'आवे याद बसेरा 'के प्रकाशन पर रिपुञ्जय निशान्त के हार्दिक बधाई देत हम आदरणीय भाई बच्चू पाण्डेय जी के प्रति श्रद्धापूर्वक आभार व्यक्त करत बानी,जे एह पुस्तक के 'प्रस्तावना' में एह कवि के गीति - प्रतिभा के सम्यक् रूप से उजागर करत उनका सारस्वत -साधना के अपना शुभाषंसा से आप्यायित कइले बाड़े।

भोजपुरी संस्थान

मार्ग-3 इन्द्रपुरी

पटना -800024

पाण्डेय कपिल

सम्पादक भोजपुरी संस्थान ग्रंथमाला

प्रस्तावना

श्री रिपुञ्जय निशान्त का नाम हिन्दी और भोजपुरी काव्य-जगत के लिए किसी परिचय का मोहताज नहीं है। पिछले तीन दशकों में भोजपुरी काव्य के अन्तर्गत जो नयापन झलका है, शिल्प ,प्रतीक और विम्ब-विधान में जो प्रयोग हुए हैं, गँवई-संस्कृति से थोड़ा अलगाव रखते हुए जो बौद्धिक-संस्कार काव्य को उपलब्ध हुआ है; इन समस्त उपक्रमों के अग्रसारण में निश्चित रूप से रिपुञ्जय का अभिनव योगदान रहा है।"आवे याद बसेरा" में रिपुञ्जय का कवि-व्यक्तित्व कई स्तरों पर अपने प्रस्फुटन का संकेत देता है। अनुभूति का दंश झेलना तो हर कवि की नियति है, किन्तु; प्रस्तुत संकलन का कवि अनुभूति के झटके से आक्रान्त नहीं दीखता। अपनी संयमित अभिव्यक्ति की सहजता से भोजपुरी-काव्य को नया धरातल देने में कवि को श्लाघ्य सफलता मिली है। यह कहने में संकोच नहीं होना चाहिए कि अब तक की भोजपुरी की अधिकांश कवितायें लोक-संस्कृति से प्रभाव ग्रहण कर जिन धुनों की बंशी बजाती रहीं हैं, उससे काव्य को रसात्मकता तो उपलब्ध हुई है किन्तु; वह उदात्त धरातल नहीं मिल सका है जिसका उदाहरण देकर भोजपुरी- काव्य को अन्य समृद्ध भाषाओं के काव्य के समकक्ष माना जा सके। भोजपुरी-काव्य अब तक अपने ही आईने में अपना चेहरा देख कर संतुष्ट होता रहा है। चंद स्वयंभू आलोचकों की महंथी स्वीकार कर कुछ रचनाकारों ने प्रशस्ति के साथ-साथ इतिहास में भी अपना नाम दर्ज करा लिया है मगर इससे काव्य का भला नहीं हुआ है। मुझे खशी है कि रिपुञ्जय ने स्वयं को मात्र साधना और रचनाधर्मिता के प्रति निवेदित किया है। आग्रहों और पूर्वाग्रहों से मुक्त इस कवि ने गीतिकाव्य के मूलाधार को अक्षुण्ण रखते हुए जो ग्राह्य प्रयोग किया है उसे स्तुत्य और

अभिनंदनीय माना जायेगा। छन्दों को अपने ढंग से गढ़ना, नचाना, मीटर और बहर को असमान्य ढंग से नहीं बहकने देना, शिल्प -सामर्थ्य को सुनियोजित ढंग से उजागर करना, बिम्ब-विधान की प्रक्रिया को समझदारी से लागू करना-रिपुज्जय का काव्य- वैशिष्ट्य माना जायेगा। भोजपुरी काव्य-जगत के परिचित हस्ताक्षरों में उंगलियों पर गिने जाने वाले कुछ कवियों में ही उपयुक्त गुणों और दमखम का परिचय मिल सकता है।

"आवे याद बसेरा" में गीत, नवगीत दोनों का गुम्फन है। सच पूछा जाय तो नवगीत, गीति शिल्प की एक निखरी हुई विधा है जो यथार्थ के धरातल पर गीति- गुंजन की ध्वन्यात्मकता का परिचय देकर यह एहसास कराती है कि गीत कभी मर नहीं सकता ।समयोचित रूप--सज्जा और वैचारिक बौद्धिकता का सहज आलिंगन कर गीत और भी मुखर और धारदार हो उठता है। गीत और नवगीत एक दूजे के लिए हैं। गीत, प्रगीत, अगीत,चाहे जो भी नाम दीजिये - मगर गीत एक सनातन आधार लेकर खड़ा है।

काव्य के प्रमुख गुणों में रसात्मकता प्रेषणीयता, भाव संश्लेषण और सहज अभिव्यक्ति के तत्त्व परिगणित हैं । गीत में इन तत्त्वों के निवेश और संचरण की अधिक गुंजाइश है। उपर्युक्त तथ्यों को अनदेखा कर हम काव्य पर संकोच के साथ ही कुछ कह सकते हैं। यह स्पष्ट है कि काव्य में गीत का अलग वजूद है। नीरज की निम्न पंक्तियाँ काफी हद तक गीत की सार्थकता का संकेत देती हैं

" गीत जब मर जायेंगे
फिर क्या यहाँ रह जायेगा "?

गीत की बाँहों की परिधि काफी विस्तीर्ण है। इसमें ग्राम्य-संस्कृति,

आंचलिक भाव-बोध और शहरी आपाधापी की जटिल भंगिमायें भी अभिव्यक्ति पा जातीं हैं।प्रकृति के सौन्दर्य और मानव से उसका जुड़ाव और उसके तहत उपजी भावात्मक अनुराग की स्वर लहरी की अनुगूंज गीतों की जब संगिनी बनती है तब अभिव्यक्ति की निर्झरिणी स्वतः ही फूट पड़ती है। उपर्युक्त वैचारिक एवं सम्वेदनात्मक धरातल पर रिपुञ्जय के गीत स्वाभाविक स्मिति लिये खड़े हैं-आकर्षण और जीवन्तता से पूर्ण ।

प्रस्तुत संकलन का नवगीत 'मौसम आग भइल ' ग्रीष्म की तपिश की प्रचण्डता का एक बोलता हुआ चित्र है। ग्रीष्म की दुपहरी की धूप को नाग की फुफकार के रूप में देखना कवि के प्रतीक- चयन की क्षमता और साथ ही विम्ब-विधान के नयेपन का संकेत है-पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं-

''रात अंजोरिया महुराइल
दिन के फुफकारे नाग
मौसम आग भइल''

इस अगिआये मौसम में सुकून हासिल करने के लिये आषाढ़ की गुहार लगाते हुए कवि ने बरसात की अभ्यर्थना तो की ही है साथ ही सहज व्यञ्जना को भी अंकवारा है।

''उतरी ना जब ले अषाढ़ के
पहिला बूँद गगन से
मुक्ति मिली ना मन-पंछी के
तब ले तनिक तपन से''

कवि केवल प्रकृति की परख करने और उसके भीतर झाँकने का ही प्रयास नहीं करता । प्रकृति के वितान तले जो आम आदमी का

जीवन है - उस पर भी कवि की दृष्टि जाती है। अंधेरे की चादर में लिपटी- सिमटी अभावों के आंगन में सिसकती जिन्दगी भी कवि के गीतों के दायरे में है। कुछ जिंदगियाँ ऐसी भी हैं जहाँ सपनों में कभी रंग भरता नजर नहीं आता। झोपड़ियों और झुग्गियों में सिमटाव और संकुचन की परिसीमा में जी रहे लोगों की हर सुबह अमावस जैसी ही है-

"दिन रात देखेला, हरियर सपनवाँ
कबहूँ ना आवे वसन्ती विहनवाँ"

विवशता के दबाव के बीच भी मन की आकांक्षा और आशा मर नहीं पाती । लुटी-ठगी और हारी हुई जिन्दगी की धड़कनों में भी कहीं न कहीं कल्पना की चन्दन-गंध रची बसी होती है जो यथार्थ की खुरदुरी समस्याओं को नकार कर एक पृथक संसार की रचना का ख्वाब देखा करती है। गर्दिशों के धुंधलके के बीच भी मन की उमंग - किरण शरीर से ऊपर उठ कर अपनी पृथक पहचान बना लेती है। भले ही तन की काठी सूख जाय, रोम - रोम काँट सदृश हो जाय किन्तु,जिजीविषा के तहत मन फागुनी-सपन सजा ही लेता है । रिपुञ्जय के प्रस्तुत संकलन का गीत 'विरोधाभास' उपर्युक्त तथ्य को वाणी देने में एक सार्थक पहल है । पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं -

"रोआं -रोआं काँट हो गइल
तन के काठी सूखल
लागत नइखे भूख केहू के
केहू बाटे भूखल
जेठ जरावत बा
बाकिर मन फागुन लागेला"

कवि - कर्म अत्यन्त दुष्कर है। किसी भी कवि के लिये समस्त रचना -प्रक्रिया को संतुलित और सुगुम्फित रख पाना एक कठिन कार्य है। एक ही कविता या गीत में भी हर पंक्ति बुनावट या अर्थवत्ता की सीमा में आस्वाद्य्य नहीं हो सकती । विश्रृंखलता तो उसमें आनी ही है। साधना से सम्पुष्ट एवं अन्तर्दृष्टि से पूर्णतया सजग कवि ही अपने रचना -संसार को अपेक्षित काव्य - गरिमा एवं शास्त्रीय मान्यताओं के मापदण्ड के अनुरूप संवार सकता है। नैसर्गिक प्रतिभा का योगदान भी इस सन्दर्भ में द्रष्टव्य हो उठता है।

इस कसौटी पर ''आवे याद बसेरा '' का कवि चौबीस कैरेट के वजन का हकदार नहीं हो सकता । सच पूछा जाय तो यह विवशता तो हर एक कवि के साथ है। वैसे बड़भागी महाकवि निश्चित रूप से प्रणम्य हैं जिन्होंने साधना की पथरीली राहों को तै कर शब्दों की आत्मा से पहचान बनायी है एवं उन्हें सार्थक भूमिका प्रदान कर अपने काव्य को शास्त्रीय मर्यादा में बाँधते हुए सर्वसाधारण के आस्वादन हेतु भी सुलभ किया है।

'' आवे याद बसेरा'' का कवि अभी किसी खेमे में नहीं बँधा है। यह इसके भविष्य के लिये अच्छा है।

कोई भी भाषा या जुबान लम्बे संघर्ष और साधना के पश्चात् ही समृद्ध होती है। उन्नत किस्म का लेखन ही भाषा को शिखर-सम्मान प्रदान कर सकता है। रिपुञ्जय के काव्य में भले ही कुछ बिखराव हो किन्तु;सचेतन प्रयास की कमी नहीं है।विश्रृंखलता तो प्रायः बड़े कवियों की कतिपय रचनाओं में भी दिखाई पड़ जाती है। विशेष कर नये प्रयोगों की ललक में शब्दों की उछल-कूद कुछ अधिक हो जाती है। जाहिर है

नया कवि कुछ अधिक निरंकुश होता है।

रिपुञ्जय ने एक अध्याय तो जोड़ा ही है। जिन्दगी की तल्ख हकीकत को उजागर करने में गीत "गरीबी" विरह के मार्मिक चित्रण में गीत "कब अइहें पहुना", प्रकृति के सुघड़-सुखद और मन भावन चित्र उपस्थित करने में गीत "दिन" विशेष रूप से उल्लेखनीय है। रिपुञ्जय के काव्य-लेखन से एक आशा बँधती है। सम्भव है भविष्य में और भी प्रौढ़ रचनायें देकर यह कवि चर्चित होगा।

बच्चू पाण्डेय

चैत्र शुक्ल नवमी
सं० 2060
गुदरी,छपरा- 841301

*

आउर का कहीं

हम का कहीं. समझ में नइखे आवत। आपन बात कहल केतना कठिन होला । अपना बात के अपना गीतन में कहे के भरपूर प्रयास कइले बानी।पता ना कहाँ तक कह सकल बानी । कबो - कबो बुझाला कि हमरा से बहुत कुछ नइखे कहा सकल जे हम चाहत रहनी।कबो-कबो हमरा लागेला कि हमरा रचनन के ऊ सफाई नइखे मिल सकल जे मिले के चाहत रहे, बाकिर तेहू पर पाठक आ श्रोता लोग से हमरा रचनन के जे प्यार आ दुलार मिलल बा ओकर हम व्याख्या नइखीं कर सकत।

हमरा रचनन के प्यार- दुलार देबेवाला गुरुजन आ मित्रजन के बहुत दिन से ई सुझाव रहे कि हमरा गीतन के पुस्तक रूप देहल जाव। पिछला पन्द्रह बीस बरिस के सँपराहट के बाद आज ई संकलन प्रस्तुत करे के सुयोग जुटल बा त मन ओह लोगन के प्रति कृतज्ञता से भर जात बा जे हमरा गीतकार के उत्कर्ष देखे के इच्छुक रहल बा।

एह अवसर पर हमरा विशेष रूप से स्व० डॉ० धीरेन्द्र बहादुर चाँद आ स्व० डॉ० विश्वरंजन के स्मरण आवत बा,जेकर समय-समय पर हमरा मार्ग-दर्शन मिलत रहल बा। एह पुस्तक के परोसे में प्रो० बच्चू पाण्डेय के जवन आशीर्वाद हमरा मिलल बा ऊ हमार सम्बल बनल रही आ कृतज्ञता के कवनो शब्द ओकर भार सम्हारे में समर्थ नइखे।साथ ही भोजपुरी संस्थान ग्रंथमाला के सम्पादक पाण्डेय कपिल के हम कृतज्ञ बानी जेकर आशीर्वाद हमरा मिलत रहल आ ऊहाँ के अपना ग्रंथमाला में गूँथे योग्य हमरो के समझनी।

आदरणीय पण्डित रामनाथ पाण्डेय, , प्रो० हरि किशोर पाण्डेय, ध्रुव नारायण सिंह आ डॉ० वीरेन्द्र नारायण पाण्डेय के हम हृदय से आभारी बानी जेकर स्नेह आ आशीर्वाद हमरा बराबर मिलत रहल बा। ... अपना मित्र दक्ष निरंजन शम्भु, पी० चन्द्र विनोद, अवधेश शरण,

श्रीनिवास मिश्र, रमाकान्त मुकुल, सुरेश प्रसाद श्रीवास्तव आ कृष्णमूर्ति पाण्डेय के कवना शब्द में अभार व्यक्त करीं जेकर सहयोग आ सद्भाव हमरा डेगे- डेग मिलत रहल बा। अनुजवत स्नेह भाजन साकेत रंजन प्रवीर के हम हार्दिक आशीर्वाद देत बानी जे हमरा रचनन के पुस्तक रूप में देखे खातिर बराबर हृदय से उत्सुक रहल बाड़े । एकरा अलावे हम हरि ओम कुमार के भी आपन हार्दिक आशीर्वाद देत बानी जेकरा शब्दांकन आ कलात्मक मुद्रण के प्रतिफल ह कि ई पुस्तक एह रूप में सँवर के आइल। साथ ही, अपना सहकर्मी मदन जी पथिक के आवरण शिल्प खातिर साधुवाद देहल हम कइसे भुला जाएब।

बाकिर हमार ई आभार कथन तब तक पूरा ना हो सके जब तक हम ओह सब लोग के आपन कृतज्ञता व्यक्त नइखीं कर देत जेकर थोड़को सहयोग आ स्नेह मिलल बा आ हम एह पुस्तक के प्रकाशित रूप में रउरा हाथ तक पहुँचावे में समर्थ हो सकल बानी। आउर का कहीं।

भाद्र कृष्ण अष्टमी
सं० 2060
रामराज चौक, दहियाँवा
छपरा - 841301

रिपुञ्जय निशान्त

*

गीत

*

आवे

याद

बसेरा

आन्ही सजोर

नन्हकी चिरइया के खोंता उजाड़े
आइल बगइचा में आन्ही सजोर

धुरियाइल सँझिया में
सुध - बुध हेराइल
सोचत सबेर भइल
सपना उधियाइल
सूतल मुहाल भइल पँखिया बटोर
आइल बगइचा में आन्ही सजोर

दुबकल पतइया तर
बइठल विचारे
डोले डेहुँगिया त
चिहुकल निहारे
पपनी के नोंखी पर अँटका के लोर
आइल बगइचा में आन्ही सजोर

छितराइल खोंता के
तिनका सझुरा के
जिनगी से हार गइल
मउअत अझुरा के
झाँके अन्हरिया के अँचरा से भोर
आइल बगइचा में आन्ही सजोर

*

परिचय पूछे पाँव के

जानल पहचानल पगडण्डी
गाँव के
परिचय पूछे पाँव के
रोंआ-रोंआ से सुगन्ध
जवना माटी के आवे
घूमल काल-चक्र अइसन कि
ऊ चिन्हियो ना पावे
देह घमाइल खोज रहल बा
छाँव के
परिचय पूछे पाँव के
याद पड़ेला दिन बचपन के
मिल के संग- सँघाती
निहुरल गछियन के डढ़ियन पर
खेलल दोल्हा- पाती
डेग पुकार रहल बा,ओही
ठाँव के
परिचय पूछे पाँव के
जहँवा गूँजत रहे खेत में
फसल गीत के लहरा
गावल जात रहे जँतसारी
घर-घर में भिनुसहरा
सुर में जहर घोराइल काँव-
काँव के
परिचय पूछे पाँव के
*

बात कहाइल ना

मन के व्यथा रहल मनही में
ओठन तक ना आइल
बात कहाइल ना

अक्षर-अक्षर चूर नशा में
शब्द-शब्द बउराइल
चहलो पर कहँवा जिनगी के
कवनो अर्थ बुझाइल
कलम चलावत हाथ पिराइल
सँउसे तन घहराइल
काव्य लिखाइल ना

ताल-छन्द-लय भंग हो गइल
सुर के साँस टँगाइल
गमक, तान बीमार पड़ल सब
राग- थाट थहराइल
वादी-सम्वादी स्वर बा चुप
वर्जित स्वर पकड़ाइल
गीत गवाइल ना

*

दिन के अवसान भइल

सूरज डूब गइल सागर में
जग सुनसान भइल
दिन के अवसान भइल

सँझवत के बेरा पूजा कर
दिया बार तुलसी चउरा पर
जगमग प्रान भइल
दिन के अवसान भइल

अँखियन के सीपी से झर-झर
मोती छिटा गइल अम्बर पर
दुधिया चान भइल
दिन के अवसान भइल

हियरा में इच्छा के गठरी
धर के सूतल सँउसे नगरी
स्वप्न सयान भइल
दिन के अवसान भइल

*

मातल व्याल

काँच बाँस के बनल बँसुरिया
बीने सुर के जाल
          जाल में अझुराइल मन
टेर-टेर के सरगम के धुन
तन में आग लगावे
भीतर से बाहर ले सगरो
फूँक -फूँक लहकावे
बँसुरी के संग रास रचावे
अँगुरी दे-दे ताल
          ताल पर लहराइल मन
पियरी अस पियराइल देहिंया
घाम सहे ना पानी
अखरेरे का कटी उमिरिया
चिहुकत रही जवानी
बँसुरी के धुन धूम मचावे
चल सतरंगी चाल
          चाल से घबड़ाइल मन
पोखरा के जमकल पानी में
मछरी बा अकुलाइल
मउअत के गड़हा में उजबुज
जिनगी आज घेराइल
बँसुरी छेड़े करुण रागिनी
सुनि-सुनि मातल व्याल
          व्याल के मधुराइल मन

*

कइसे लागी बेड़ा पार

ललमुनिया चिन्ता में डूबल
सोच रहल उपचार
कइसे लागी बेड़ा पार

मन बेचैन,चैन के वंशी
ना बगिया में बाजे
समय,दुखी जिनगी के माँथे
दुख के गठरी साजे
रह- रह के अँखियन के सोझा
होला घुप्प अन्हार
कइसे लागी बेड़ा पार

साँझ समय खोंता में लौटे
लहजल भूखे - प्यासे
दिन भर के मेहनत के बादो
काटे रात उपासे
तड़के रोज पराती गावे
सुने निठुर संसार
कइसे लागी बेड़ा पार

*

चइत के भोर

महुआ बीने चइत के भोर
पराती गावे कोयलिया

छिटा गइल जोन्ही अम्बर के
भुंइया होत फजीरे
गाँव उमड़ आइल बगिया में
उठ के धीरे-धीरे
नचावे गछिया लट झकझोर
रुनुक -झुन बोले पैजनिया

दउरी भर-भर,भरे सिकउती
बाल किरिन भंगुआइल
मादक-मन्द-सुगन्ध,हवा के
पोरे-पोर समाइल
मदन-रस टपके चारो ओर
बना के रति के बावरिया

आइल शुभ मुहूर्त्त वासन्ती
सगरो कलश धराइल
जड़- चेतन सब पहिर पितम्बर
मने -मने अगराइल
खुशी से होके भाव-विभोर
हिया में बाजे बाँसुरिया

*

मड़इया खोजे आपन ठाँव

उजड़ गइल सब बाग-बगइचा
परती लागे गाँव
        मड़इया खोजे आपन ठाँव

कहाँ गइल कोयल के कुहुकल
पपिहा के पिहकारी
मन तरसेला सुने बदे
चरवाहन के टिटकारी
निमिया के डाढ़ी चढ़ कउआ
बोले काँव -काँव
        मड़इया खोजे आपन ठाँव

ताल,तलैया,चँवरा,पोखर
के माटी मरुआइल
पछुआ के पाछल गछियन के
पात-पात पियराइल
छान्ही-छप्पर उधियाइल
ठहरे ना पावे पाँव
        मड़इया खोजे आपन ठाँव

*

लाल किरिनिया भोर के

मनसा पूरल,हिया जुड़ाइल
उतरल माँग बहोर के
लाल किरिनिया भोर के
भाग गइल घनघोर निराशा
बीतल रात अन्हरिया
पुरुआ -पछुआ से हिल -मिल के
पनकल ठूँठ पकड़िया
छितराइल महुआ के मोती
अंजुरी भरे बिटोर के
लाल किरिनिया भोर के
बाजे ढोल छमाछम नाचे
पाकल - काँच उमिरिया
गूँज उठल सँउसे बँसवारी
अगराइल दुपहरिया
मोजराइल अमवा के गछिया
झूमे अंग सहोर के
लाल किरिनिया भोर के
नेह-छोह के ले सनेस शुभ
चलल पवन पुरवइया
पूरब से पच्छिम जा पहुँचल
उड़ के सोन चिरइया
सँझबेरा में रंग इंगुरिया
सूर्य पराइल घोर के
लाल किरिनिया भोर के

*

विश्वास फुलाये लागल

होत साँझ घर लौटे सूर्य बधार से
आसमान अगरा ललियाये लागल

रात पुजारिन पूजे
पिया सलोना
प्रीत परोसे
नेह-नींद के दोना
लोरी गा -गा झुलुआ पवन झुलावे
धीरे – धीरे आँख मुँदाये लागल

जागल, सूतल भाग
राग बा फूटल
दुख के दिनवा बीतल
सन्सा छूटल
झाँके खोल केंवाड़ किरिन के धाही
कण- कण में विश्वास फुलाये लागल

*

पीपर छँइया

झर झर बहेला बयरिया
पीपर छँइया

चिरई -चुरुंग रागे
मनवा में सुधि जागे
अँखिया से उड़ल निनरिया
पीपर छँइया

डँसि के सुरुज के नाग
तन में लगावे आग
लहरि सतावे दुपहरिया
पीपर छँइया

भुम्भुर में गोड़ जरे
कइसे के डेग पड़े
विलमल पालकी कँहरिया
पीपर छँइया

*

कब अइहें पहुना

कउआ अँगना पधार
आके सगुन उच्चार
कब अइहें पहुना

पुरुआ ले के आइल
ना, टटका सन्देशा
जीव पड़ल सन्सा में
टभके रेसा - रेसा
ओरी चुए टपाटप
रोये दुनु नयना
कब अइहें पहुना

किरिन आस के डूबल
मन के दिया बुताइल
आसमान में जोन्ही
बन के साध छिटाइल
लागे रात भयावन
काटे घर - अँगना
कब अइहें पहुना

*

जिनगी

सूत गइल बा मन के राग
जिनगी के गीत ना रचाइल

रूसल बा भैरवी - विहाग
टाँय - टाँय बोलेला काग
तानपूरा मौन हो गइल
जिनगी के तार ना कसाइल

छिटाइल बा अक्षर - अक्षर
शब्द ना टँकल कागज पर
छूट गइल हाथ से कलम
जिनगी के बात ना लिखाइल

जगह - जगह नदिया में भास
लहर- लहर हो गइल उदास
टूटल अरार भाव बिखरल
जिनगी के छन्द ना बन्हाइल

*

कहानी जिन्दगी के

बाँची कइसे केहू
हाथ के लकीर से
कहानी जिन्दगी के

ऊँच - नीच धरती पर
डेग धरत बढ़ जाला
उम्र के मुड़ेरा पर
धीरे से चढ़ जाला
रह जाला पीछे
निशानी जिन्दगी के

देह के मचान पर
समय खड़ा बुला रहल
धूप-छाँह, सुख-दुख के
अर्थ बा बता रहल
पंडितो ना बूझेला
मानी जिन्दगी के

*

नाचे बुन्नी सावन में

बादल गरजे आसमान में
धरती बिहँसेले मन में -
नाचे बुन्नी सावन में
गाँव-नगर-घर-टोला चंहके
गावे गीत चिरइया
इन्द्रधनुष चढ़ बदरा आवे
थिरके कृष्ण-कन्हइया
ऐनक चमका के चँउकावें
बिजुरी श्याम सघन घन में
नाचे बुन्नी सावन में
सूखल खेत भरल पानी से
माटी में रस भीनल
बहुरल परती में हरियाली
देख - देख मन रीझल
झूला लगे कदम के डाढ़ी
कजरी गूँजे बागन में
नाचे बुन्नी सावन में
दिन के उठते घर के सीमा
लाँघ चँवर के ओरी
हर के हार पहिर,निकलल घर-
से बैलन के जोड़ी
रोपत धान सुहावन लागे
गाँव जुटल बा खेतन में
नाचे बुन्नी सावन में

*

आ गइल फागुन

धीरे से डेग बढ़ा
पतझर के गाँव
        आ गइल फागुन
उकठल गछिया
टुसिया के डोले
कोयलिया कूके
पपिहा बोले
गूँजे फगुआ - चैती
थिरके हर पाँव
        आ गइल फागुन
पोर - पोर
पिहिका अस पियराइल
कठुआइल देहिया
टनमनाइल
मिट गइल उदासी के
धरती से नाँव
        आ गइल फागुन
अमृत बरसे
घट - महुआ टपके
जिनगी में भोर
आ गइल अचके
महल आ मड़इया के
भुला भेद - भाव
        आ गइल फागुन

*

विश्वास

पोखरा के पानी घमाइल
मछरी काहे ना उतराइल

देखे सपना, खींचे
जाल फेंक मछुआरा
हाथ-पाँव मारत
दिन बीत गइल सारा
हाथ के लकीर बा भुलाइल
मछरी काहे ना उतराइल

बइठल बा आशा-
विश्वास के सम्हार के
चमकी कहियो
जरूर रेखा लिलार के
पल्टी नू भाग औंधियाइल
मछरी काहे ना उतराइल

*

दीयना

दीयना हँसे सारी रात
संगे बाती के

घरे -घरे घूमे
सँझलवका में आके
सुसुकि - सुसुकि रोये
हँसे अगरा के
बेधेला करेजवा के, बात
संघाती के

बाँटि के अँजोर
रहे अपने अन्हारे
सभे के जगा के
सुति जाला भिनुसारे
खुले नाहिं झुलसल पाँख
सम्पाती के

*

आवे याद बसेरा

काट भँवर के घेरा
नइया खेउ रे मलहवा
        साँझ पहर के बेरा
उतरत उमिर किरिनिया विलखे
छटपट करे अकेला
उड़सल रंग-बिरंगी दुनिया के
सतरंगी मेला
घर लौटे के बेचैनी में
खींचे जाल मछेरा
        साँझ पहर के बेरा
उफनल नदी भयावन लागे
मारे लहर हिलोरा
डूबल बेर,डइनिया रतिया
डाले लागल डोरा
ममता मन में चिन्ता भर दे
आवे याद बसेरा
        साँझ पहर के बेरा
समय मदारी,छलिया भारी
करतब गजब दिखावे
चुप्पी के पहरा पपनी पर
ठग के ई बइठावे
नाच नचावेला दुनिया के
फूँकत बीन सँपेरा
        साँझ पहर के बेरा

*

विरोधाभास

देह बबूर भइल
बाकिर मन चन्दन लागेला

सुख के नींद भइल सपना आ
दुख में रात नहाइल
बा पसरल चहुँओर कुहासा
भोर अंजोर धुँआइल

पाला मार गइल
बाकिर मन उपवन लागेला

रोंआ - रोंआ काँट हो गइल
तन के काठी सूखल
लागत नइखे भूख केहू के
केहू बाटे भूखल

जेठ जरावत बा
बाकिर मन फागुन लागेला

*

तंगी के तीर

बरगद के छाँह तले
टोली चरवाहिन के
लइकी से हो गइल सयान
बचपन के दिन अबोध
हो गइल कहानी
पकुहा जइसन टपकल
अचके जवानी
दउरा में डेग धरत
चुनरी अहिवातिन के
छनही में हो गइल पुरान
अँजुरी भर सपना के
कोंढ़ी मरुआइल
लिलरा पर चिन्ता के
रेखा उग आइल
अँइठेला अगियाइल
अँतड़ी बनिहारिन के
गतर-गतर हो गइल गतान
रोजें रोजा खोले
साँझ में मड़इया
फगुआ ना ईद कबो
आवे अँगनइया
तंगी के तीर से
घवाहिल दुखियारिन के
तन-मन बा हो गइल झँवान

*

गरीबी

दिनवा ना कटे
नाहिं रतिये ओराला

कब तक सुखवा के
बटिया जोहाई
हहरल ई हियरा
हिकते रहि जाई

बिसुकल जिनगी के
बोझ ना ढोआला

आसरा लागल रहे
दिन फिरि जइहें
लइका सेयान तनि
भर पेट खइहें

फटही लुगरिया से
देह ना तोपाला

उगि के सुरुज बा
अन्हार में लुकाइल
मन के ना दिगमिग
इ पुरइन फुलाइल

जिनिगी के जमकल
काई ना धोआला

*

जिनगी में आ गइल बहाव

लहर के पुकार पर
चंचल जल-धार पर
उतरल नदिया बीचे नाव

लंगर छूटल
मधुरिम जल-तरंग बाजल
सरधा से भरल
गगरिया छलके लागल
पानी के तोड़ पर
हवा के हिलोर पर
हौले - हौले थिरके पाँव

पूर्वी धुन
आर-पार से छन के आवे
मन - मलाह
झिझिरी खेले, झूमे गावे
पाल गगन में उड़ल
ठुमुकत नइया चलल
जिनगी में आ गइल बहाव

*

रही उदासी दूर

मन के बगिया में चिन्ता के
उपजल बेर-बबूर
कलम तब काँप गइल
फफनल ना बिरवा आशा के
मरलस निठुर गछौन्धी
सुविधा के भूखल अँखियन में
कइसे भइल रतौन्धी
पहुँचल बा पतझर सावन में
देख अजब दस्तूर
बा सूँघ साँप गइल
डूब गइल उ भोर के तारा
चूअल फूल गगन के
खून हो गइल हर इच्छा के
मउरल साध सुमन के
रात बहावे लोर, रहल ना
दिन का तनिक सहूर
कुहासा छाप गइल
फिर मौसम आयी वसन्त के
हर फुनगी टुसियाई
उकठल गछियन के तनवो में
जीवन -रस भर जाई
उलझन के ना बँवर बढ़ी अब
रही उदासी दूर
समय सब ताप गइल

*

गीत रचे सावनी फुहार

उमड़-घुमड़ घिर आइल
घटा सुन पुकार
गीत रचे सावनी फुहार

रूप बहुत बादरवा धरे
बूँद-बूँद मोती बन झरे
बरसे रस-धार मधुर
छलके संगीत
पुरवइया गावे मल्हार

मातल कादम्ब में बतास
रचावे कदम्ब फूल रास
घटा देख,पर पसार
नाचे मन-मोर
वन में कर सोरहो सिंगार

गाँव-नगर कजरी गा कहे
हरदम हरियर चँवरा रहे
भींन गइल माटी के
गन्ध सोन्ह-सोन्ह
ऊसर में आ गइल बहार

*

कहिया ले

बाटे अन्हरिया के ओरे ना छोर
कहिया ले आयी मड़इया में भोर

दिन -रात देखेला
हरियर सपनवा
कबहूँ ना आवे
वसन्ती विहनवा
कबले घेरायी किरिनिया - अंजोर
कहिया ले आयी मड़इया में भोर

दुखिया के दुखवा
सुनी कइसे केहू
सिधरी जे सटी त
निगल जाई रेहू
थाकी ना कबहूँ ,मचावे में शोर
कहिया ले आयी मड़इया में भोर

जीयत रही कबले
जिनगी उधार के
मानेला कबहूँ ना
लिखल लिलार के
पकड़ी जरूर कबो चान्द के चकोर
कहिया ले आयी मड़इया में भोर

*

भोर जब आवे

किरिन -कुसुम
गन्ध के लुटावे
भोर जब आवे
हरदी रंग
धरती पर चढ़े
तितलिया -मन
पँखुरी पर मढ़े
सहक -लहक
हवा गुदगुदावे
भोर जब आवे
गीत के नदी में
नहा के
अँजुरी भर छन्द के
बहा के
अर्घ्य - मन्त्र
सूर्य गुनगुनावे
भोर जब आवे
दिन उमंग के
खेती करे
हीरा - मोती
अनघा झरे
ललमुनिया
दुअरा चहकावे
भोर जब आवे

*

मौसम आग भइल

रात अँजोरिया महुराइल
दिन के फुफुकारे नाग
        मौसम आग भइल
देख हवा के लँगटे नाचत
ताली पीटे पत्ता
हड्डा,बिरन्ही, मधुमक्खी के
घर - घर लागल छत्ता
बइठ कोइलिया कँउचावे
मारे धावेला काग
        मौसम आग भइल
ताप सूर्य के अग्नि-बाण अस
बन के गाज गिरेला
जीव-जन्तु सब भाग-भाग के
छाँहे आड़ धरेला
तन पोखरा के सिमट गइल
बिगड़ल नदिया के भाग
        मौसम आग भइल
उतरी ना जब ले अषाढ़ के
पहिला बूँद गगन से
मुक्ति मिली ना मन-पंछी के
तब ले तनिक तपन से
सूख के कण्ठ भइल काँटा
ना फूटे कवनो राग
        मौसम आग भइल

*

पार जाये खातिर

आशा के पतवार पकड़ के
ले चल नाव मधार
पार जाये खातिर

भादो मास, रात अँधियारी
आसमान कजराइल
डेग बढ़ावे में डर लागे
बा नदिया छरियाइल
गइल जरूरी बा, जल्दी से
कर ले सोच- विचार
पार जाये खातिर

सन- सन चले हवा बरसाती
बान हिया में मारत
बूँदा-बूँदी तन सिहरा के
मन में टीस उभारत
धीरज छूट रहल बाटे अब
छूट रहल संसार
पार जाये खातिर



सुख के रितु ना आइल

दिन जइसे-तइसे में बीतल
कसहूँ रात कटाइल
सुख के रितु ना आइल
मार कुण्डली नागिन-रतिया
बइठल छाती चढ़ के
चाँद-सँपेरा फूँक लगावे
मंत्र मुँहे में पढ़ के
किरियो खइला पर आँवक में
ना तनिको - सा आइल
सुख के रितु ना आइल
सुकवा उगल भइल भिनुसहरा
धूमिल पड़ल सतहवा
अँटकल बीच भँवर में नइया
चिन्तित भइल मलहवा
काहे बिगड़ल मन मौसम के
सोच-सोच अकुलाइल
सुख के रितु ना आइल
छँटल अँधेरा,भइल उजाला
आस बन्हाइल दिन के
पुरुब क्षितिज ललियाइल,लउकल
थाही लाल किरिन के
बाकिर जोत अलोत हो गइल
अस कुहरा घहराइल
सुख के रितु ना आइल

*

दिन

सूर्यमुखी नभ खिले अँधेरा भागे
हरदी में तन रंगल धरा के लागे

ले फुलवन के पाती
गन्ध उड़ावत
चलल हवा चउपाई
नाचत-गावत
अंग-अंग पुलके लागल, मन रागे
हरदी में तन रंगल धरा के लागे

देख फूल में मढ़ल
पाँख तितली के
साँप हिया पर, लोट
गइल बिजली के
सुन्दरता शर्मा के पानी माँगे
हरदी में तन रंगल धरा के लागे

*

फुहियन के सौगात

जरत जेठ के दुपहरिया में
थर-थर काँपे घाम
तर-तर चुए पसेना
ललकारे उत्पात मचावे
पछुआ गाँवे -गाँव
सहम-सहम के सिमट गइल बा
दूर-दूर तक छाँव
आवा में अउसाइल जिनगी
लहरे आठो याम
तर-तर चुए पसेना
सूखल ओठ,शब्द ना फूटे
तारु-कण्ठ झन्झाइल
मधुर गीत -संगीत हिया के
जाने कहाँ पराइल
जे-जे देखे आँख फाड़ के
लेत करेजा थाम
तर-तर चुए पसेना
ले आयी सावनी चिरइया
फुहियन के सौगात
पानी में देखी मुँह आपन
गर्मी दुबुक लजात
कजरी के धुन-धूम मचायी
गगन मगन घनश्याम
तर-तर चुए पसेना

*

गीत कबीरा गावे

जात-धरम ना जाने
धुईं रमावे
गीत कबीरा गावे

सहे समय के झन्झा, पर ना डोले
जुग जग के विद्रोही भाषा बोले
प्रेम के ढाई आखर में
बतियावे
गीत कबीरा गावे

लोढ़े ज्ञान कपास बइठ सन्तन में
सत्संगी मन रमल रहे चिन्तन में
दर्शन के चरखा दिन-रात
चलावे
गीत कबीरा गावे

मन्दिर-मस्जिद के कहना ना माने
बहुरंगी चित्र निर्गुण धागा ताने
तानी-भरनी के सन्देश
सुनावे
गीत कबीरा गावे

*

याद

रसल - बसल बा नोंक-झोंक के
नस - नस में आस्वाद
बार-बार आवेला जेकर याद
निठुर विदाई का वेला में
मनवा के फुसला के
ऊपर-ऊपर हँसी, दर्द
भीतर - भीतर सहला के
बीतल रात गिनत में जोन्ही
घर अइला के बाद
बार - बार आवेला जेकर याद
आके रोज सतावे सँझिया
तनिको दया करे ना
भाँय-भाँय लागेला सगरो
कतहूँ हिया भरे ना
गली भइल सुनसान,चुपाइल
बा चहकत प्रासाद
बार - बार आवेला जेकर याद
भरिये देला धीरे - धीरे
समय घाव कइसनको
बाकिर,चिन्ह मिटे ना पावे
रहिये जाला तनिको
बा एतने सन्तोष कि ह ई
जीवन हर्ष - विषाद
बार - बार आवेला जेकर याद
*

का भइल बा ?

लोग पत्थर हो गइल बा

पीर ना पनके हृदय से
गन्ध ना छलके मलय से
प्रेम के पंछी सुबह के
धुन्ध में उड़ खो गइल बा

संस्कृति जर्जर जीयत बा
मर गइल इन्सानियत बा
लाज,करुणा आ दया हर
आदमी अब धो गइल बा

लूट, हत्या अउर चोरी
हो रहल हर गाँव- नगरी
खून खेतन में कवन ई
दुष्ट दानव बो गइल बा

*

आतंक

ना छँटल मन के कुहासा

लाज से गड़ के सुबह में
मुँह छुपावे किरिन दह में
रह गइल आशा अछूता
ना मिलल दर्शन-दिलासा

साँच के बा आँच लागत
झूठ के नित होत स्वागत
उठ रहल हर डेग सहमल
देत बा सब लोग झाँसा

कँपकँपी बाटे समाइल
रात भर ना नींद आइल
आज दहशत का नगर से
लोग भागे बेतहासा

*

स्वार्थ

आ गइल कइसन जमाना

प्रेम के हर पाश टूटल
लोग के विश्वास छूटल
लोग लागत बा जगत के
आज अनुपरचू -अजाना

दर्द केहू हरत नइखे
बात केहू सहत नइखे
मिलत नइखे राह कवनो
ना मिले कतहीं ठिकाना

खून बा माँथे चढ़ल हर
आग लागल बा घरे- घर
बुन रहल दिन-रात दुनिया
स्वार्थ के अब जाल नाना

*

आशा

ना भइल सुख के सबेरा

रात के कालिख धुलल ना
भोर के लाली खिलल ना
देख, अनदेखा करेला
आज धरती के चितेरा

जब पपीहा दूर जा के
मुँह बिरावे गीत गा के
कूक कोयल के हृदय पर
चोट देवे बन ठठेरा

आश के ना डोर टूटल
भाग के ना किरिन फूटल
घाट पर बइठल अगोरे
डाल के बंसी मछेरा

*

भोरे किरिन जगावे

चुपके से खिड़की से आके
राग बिहाग सुनावे
भोरे किरिन जगावे

हारल रात, हो गइल सगरो
अब अंजोर के सत्ता
धरती के चुप्पी टूटल, हर
चहकल पत्ता-पत्ता
हँसी-खुशी के फूल खिला के
सुख- सुगन्ध बरसावे
भोरे किरिन जगावे

झूमर झूम उठल बगियन में
जीवन- गीत सुनाइल
बइठ रचे आनन्द -कुँज में
छन्द, घड़ी शुभ आइल
स्वर पर सातो रंग चढ़ा के
रूप नया झलकावे
भोरे किरिन जगावे

*

कहवा पर बिलमे के बा

पूछ रहल बा पाँव डगर से
केतना दूर चले के बा
कहँवा पर बिलमे के बा
चलत-चलत दिन बीत गइल
बीतल रतिया के पहरा
बाकिर ठौर निकट ना आवे
लागे बड़ा लमहरा
ना जाने मंजिल आवे तक
केतना साँझ ढले के बा
कहँवा पर बिलमे के बा
जाड़ा, गर्मी आ बरखा
बारी- बारी से आवे
मौसम के इ आँखमिचौनी
बहुते खेल देखावे
झेलत- झेलत मार समय के
तिल- तिल रोज गले के बा
कहँवा पर बिलमे के बा
खोजत- खोजत जनम सिराइल
थाकल सजी उमिरिया
सीधा- सीधा डेग पड़े ना
धनुही भइल कमरिया
शीत- घाम- पानी में दउड़त-
भागत फुले- फले के बा
कहँवा पर बिलमे के बा

*

बरसाती हवा

बरसाती हवा के छुवन
लागे जस काँट के चुभन

आवेले पुरवइया
फोड़ा सुहुरावे
फूँक -फूँक, गते-गते
अगिया सुनुगावे
नस - नस में सरके गहुँवन
लागे जस काँट के चुभन

बूँदा -बूँदी रह- रह
हियरा के दागे
कोइलर के कजरी
चिरइता अस लागे
घोंटत में बइठे गर्दन
लागे जस काँट के चुभन

अँखिया के जोत
बिजुरिया बर-बर मारे
टुटही मड़इया
ना बूँद के सम्हारे
टाँकत रह जाला पेवन
लागे जस काँट के चुभन

*

समय चिन्हाइल ना

ढोअत बोझ उमिरिया बीतल
सुख कबहूँ ना आइल
मन पछताइल ना
भूखे पेट रात भर रह के
निकले होत फजीरे
दिन भर देह ठेठा,घर लौटे
साँझ में धीरे-धीरे
जोड़त - चेतत चले राह में
दुख के संग धराइल
लोग चिहाइल ना
अंग - अंग में अँइठन,टूटन
पोरे - पोर पिराला
काटत में जिनगी पहाड़ अस
नस - नस रोज दुहाला
बेर, कुबेर , अमावस, पूनम
एके तरह बुझाइल
समय चिन्हाइल ना
करिया केश हो गइल उज्जर
घटल जोत नैनन के
उग आइल झुर्री चेहरा पर
सोच बढ़ गइल मन के
बाकिर फुर्सत मिलल कबो ना
हरदम हाँफ समाइल
कुछ सुधियाइल ना

*

दर्द के राग में

जर गइल भाव सब, पेट के आग में
गीत के ना खिलल फूल मन-बाग में

गाल फागुन के झूठे भइल लाल बा
चइत के चाँदनी ना लुभावन लगे
रूप सावन के लागे भयावन बड़ा
घाम कतिकी सुहावन कटावन लगे
काँच माटी के मूरत नियर गल गइल
जिन्दगी पर पड़ल रंग जब फाग के

बाट जोहत रहल आँख पर रात भर
नींद आ ना सकल खाट के पास में
रुक गइल सर्जना के अचानक कदम
वेदना पल रहल दीप के हास में
मखमली सेज पर आ उगल काँट बा
ना लिखल बा गरीबी के सुख भाग में

लालसा लागले रह गइल उम्र भर
पर ना सुधरल कबो हाल आपन तनिक
रोज बिगड़त गइल, बद से बदतर भइल
बुझ गइल आस के जोत जागल छनिक
धूल में मिल गइल कल्पना के महल
जिन्दगी सन गइल दर्द के राग में

*

समय के मछुआरा

छल के बन्सी फेंके
खींचे धीरे-धीरे डोर
समय के मछुआरा
पानी में निर्भय हो घूमे
टोली हर मछरी के
फँस जाई बन्सी ना चिन्ही
रेहू आ सिधरी के
चारा के लालच दे-दे के
कर दीही कमजोर
समय के मछुआरा
बइठल बा टकटकी लगा के
डूबी जब कँवड़ेरा
पानी में हलचल हो जाई
उठ जाई बँवड़ेरा
छीप पकड़, झटका दे मारी
दया-मया सब भोर
समय के मछुआरा
रो-रो ताल भीतरे -भीतर
डूबी शोक - लहर में
आपन दर्द कही केकरा से
भुतहा छूँछ चँवर में
नाता तूर छोड़ चल दीही
जाने कवना ओर
समय के मछुआरा

*

सावन बीत गइल

होखत नइखे लुका-छिपी के
खेल घटा -सूरज में
सावन बीत गइल
पुरुआ आके तन सुहुरावे
जहर लेप ऊखम के
छाँवो के बा चुअत पसेना
जरल भाग मौसम के
तैरत नइखे अँगना-दुअरा
नाव बनल कागज के
सावन बीत गइल
खिसियाइल बरखा-बहार के
कजरी करे मनउअल
राग मल्हार काम ना आइल
बहुत भइल समुझउअल
आश- निराशा के झूला पर
के झूलो सज-धज के?
सावन बीत गइल
ताल, तलैया, नदी, पोखरा
सब के कण्ठ झुराइल
फसल खेत के, बिन पानी के
मछरी अस अँइठाइल
आवत नइखे दया इन्द्र के
दम छूटे धीरज के
सावन बीत गइल

*

गुमसुम आकाश

तनिको ना सिसके बयार
गुमसुम आकास हो गइल

गाँव- नगर सहमल- सहमल
डेग- डगर थथमल- थथमल
दिनों - रात लागे थकान
मन में उदबास हो गइल

रुख समय के पहचान के
सकियाइल मन जहान के
हिया में समाइल अदंक
भुतहा आवास हो गइल

झोंका आँधी के आइल
पत्ता - पत्ता थर्राइल
अजगर अस मारे फुंकार
उत्पाती साँस हो गइल

*

नाग नथाइल मन के

चन्दन वन गन्धाइल
नाग नथाइल मन के

इच्छा के नागिन, चढ़ के
फुनगी-फुनगी
बेसुध हो पड़ गइल, त्याग
भय के जिनगी

विष के आग बुताइल
तेज लुटाइल फन के

जंगल के इतिहास आज
बदलल-बदलल
मदहोशी कोना-कोना
बाटे पसरल

माया-मोह पराइल
सुधी भुलाइल तन के

*

मड़ई अभी छवाइल ना

अदरा के आवन सुन-सुन के
मन में खुशी समाइल ना
        मड़ई अभी छवाइल ना
मृगडाह के मधुर संदेशा
जब घर-घर आइल
तब हुलास के पौधा झुलसल
फिर से मुस्काइल
पर,कवनो उत्साह हिया में
इचिको -सा लहराइल ना
        मड़ई अभी छवाइल ना
सुखरुख समय देखते-देखत
असहीं निकल गइल
नभ में देख मेघ-छौना,मन
पल में विकल भइल
सोचत काटे रात,आँख से
उड़ के नींद धराइल ना
        मड़ई अभी छवाइल ना
पहिल फुहार पड़ी अम्बर से
माटी गन्धाई
मिटी बाँझपन धरती के आ
आँचर भर जाई
सिकन पड़ल बाटे लिलार पर
अब ले खेत जुताइल ना
        मड़ई अभी छवाइल ना

*

मन के सपना साकार

राह निहारत आँख पिराइल
देह भइल लाचार
होई कहियो ना कहियो
मन के सपना साकार

मौसम आपन रंग बदल के
मचा गइल उत्पात
का राई, का पर्वत सभकर
बतला के औकात
पाँव उखड़लो पर तिनका के
ना छूटल आधार

बन जाला इतिहास समय के
बढ़त उमिर के डेग
ले जाला उधिया अतीत में
चलत हवा के वेग
बूढ़ भइल बरगद में आजो
जिनगी के आसार

रोजे नया उगावे सूरज
पूर्व दिशा में प्रात
घाम मुड़ेरा पर चढ़-चढ़ के
भुंइया में सोहरात
फिर लागे लागी बगियन में
चिरइन के बाजार

*

जिनगी गिरवी धराइल

छिना गइल अधिकार उड़े के
पंछी- मन छपटाइल
        जिनगी गिरवी धराइल
पिंजड़ा के मैना जइसन
नाचे, कूदे, बतियावे
सीताराम पढ़े, पढ़ के
सतुआ खा भूख मिटावे
चुगते- चुगत लोभ के दाना
अचके डोर कसाइल
        जिनगी गिरवी धराइल
पाँख फड़फड़ावे बहुते
बाकिर घेरा ना टूटे
हर प्रयास निष्फल होखे
आशा के सम्बल छूटे
हार- थाक के भाग भरोसे
बइठ रहल मरुआइल
        जिनगी गिरवी धराइल
साथी- संगी खोजत होइहें
बाग- बगइचा- वन में
आइल होई हाथ निराशा
अँखियन के आँगन में
काहे प्राण निकल ना पावल
विकट घड़ी जब आइल
        जिनगी गिरवी धराइल

*

मिली कब ले उत्तर

मन मरुआइल
तन झँवराइल
पूछत रहल सवाल
मिली कब ले उत्तर

कतनो सींचत रहे पसीना-
से धरती के छाती
खतम भइल परिणाम बिना ही
जिनगी के सब थाती
दिन सन्झाइल
रात उँघाइल
सूतल ओढ़ जवाल
बिछा खाली पत्थर

कर लेला सन्तोष भले ही
दोष भाग्य पर मढ़ के
पर,भविष्य ना गढ़े, हाथ के
जीवन-रेखा पढ़ के
गणना आइल
ग्रह चिचियाइल
डँसलस बन के काल
अढ़इया के विषधर

तरहत्थी पर दूब उगावे के
नित सपना देखे

आशा के डोरी से बान्हल
जिनगी रोज निरेखे
स्वर भराइल
आँख लोराइल
भरल हुलासे ताल
कि दुख से पपनी तर

*

पनघट
जुलाई-सितम्बर 2007

बसेरा के आगे पीछे

❑ बरमेश्वर सिंह

❑ पुस्तक-आवे याद बसेरा ❑ विधा-गीत ❑ कवि-रिपुञ्जय निशान्त ❑ प्रकाशक-भोजपुरी संस्थान ❑ 3 इन्द्रपुरी पटना-24 ❑ पृष्ठ-बहत्तर ❑ दाम-51रु

लोकतत्व के बाउर के कही? बल्कि, लोकतत्त्व के स्पर्श से त काव्य चमकेला। बाकिर लोकतत्त्व के मोहजाल में फँसि के परुआ पार्थ हो गइला के भी बुद्धिमानी ना कहल जा सके। काहेंकि, अइसना में काव्य रूढ़िगस्त हो जाला, आ ओकरा में प्राण धारा ना उमड़ि पावे। दुर्भाग्य से, आधुनिक भोजपुरी काव्य में अइसने बेसी भइल बा। इहवाँ तक ला कि भोजपुरी काव्य में लोकतत्त्व जड़ता का हद तकला देखे के मिलेला। बाकिर, ई खुशी के बात बा कि भोजपुरी के कुछ सुधी कवि एह जड़ता के तूड़े के सद् प्रयास कइले बाड़े। रिपुञ्जय निशान्त, के नाम. भोजपुरी के ओही सुधी कवियन में आवेला। 'आवे याद बसेरा' में कवि के इक्यावन गीत संगृहित बा। दरअसल, इन्हनी के गीत आ नवगीत के गुम्फन कहल जादे ठीक रही। बेसक, एह गीतन में संवेदनशीलता, आधुनिक यथार्थ बोध आ प्रीतितत्व के समावेश, मनभावन बा। तरलता त गीत-रचना के स्वाभाविक गुणे होला। दरअसल, कवि के हृदय रूपी कटोरा में भरल इहे तरलता विपत्ति आ आवेश के झंझावात में छलकि-छलकि जाला। जाहिर बा, छलके में कउनो तारतम्य ना होखे, बाकिर एगो लय जरूर होला। रिपुञ्जय निशान्त, के गीतन में ऊ लय बा। 'आवे याद बसेरा' कवि के अतीत जीवी होखे के संकेत दे रहल बा। कवि गावतो बा -'उजड़ गइल सब बाग बगइचा, परती लागे गाँव- मड़इया खोजे आपन ठाँव।' बाकिर बात अतने नइखे। वर्त्तमानो कवि के सामनहीं बा। जेकरा भयावहता से कवि विचलितो बा। 'साँझ समय खोंता में लौटे लहफल भूखे-प्यासे। दिनभर के मेहनत के बादो काटे रात उपासे/तड़के रोज पराती गावे सुने निठुर संसार/कइसे लागी बेरा पार...।, बाकिर, कवि के ई विचलन अस्थाई बा। काहें कि ओकर जिजीविषा आशावादी बा जे हरदम आगे बढ़त रहे खातिर उत्साहित करत बा। 'छिटा गइल जोन्ही अम्बर के भुइंया होत फजीरे/गांव उमड़ आइल बगिया में उठ के धीरे- धीरे नचावे गछिया लट झकझोर, रूनुक-झुन बोले पैजनिया/दरअसल जीवन वर्त्तमाने के नाम ह। बाकिर एकर दौड़ भूत आ भविष्य का ओर होखत रहेला। सम्भवत: एही से जीवन के एगो यात्रा कहल गइल बा। नि:संदेह रिपुञ्जय निशान्त जीवन यात्रा के एगो अनुभवी पथिक बाड़े । तबहीं ऊ कहत बाड़े-ऊँचा नीचा धरती पर डेग धरत बढ़ जाला/उम्र के मुड़ेरा पर धीरे से चढ़ जाला/रह जाला पीछे निशानी जिन्दगी के।, शुक्र बा, रिपुञ्जय निशान्त आग्रह आ पूर्वाग्रह से मुक्त बाड़े। ना त उनुका गीतन में व्यक्तिकता संकेतप्रधानता, संगीतात्मकता, चित्र-कल्पना, प्रभावान्विति, सहजानुभूति आ सौन्दर्य चेतना के ई निखार देखे के ना मिलित।

- ग्राम+पो०-धनडीहा, जिला- भोजपुर- 802160.